नेहरू का अन्तर्राष्ट्रवाद

मेहराब खां

सहायक आचार्य –राजनीति विज्ञान
एस.बी.के. राजकीय महाविद्यालय
जैसलमेर

नेहरू का व्यक्तित्व महान, अद्वितीय एवं अनुपम था, वे एक असाधारण व्यक्ति थे। नेहरू को आधुनिक भारत का राष्ट्र–निर्माता, महान लोकतन्त्रवादी, भारत में संसदीय प्रणाली का संस्थापक, लोकतान्त्रिक समाजवाद का प्रवर्तक, उत्कृष्ट समन्वयवादी, महान मानवतावादी, धर्म–निरपेक्षतावादी एवं महान यथार्थवादी चिन्तक माना जाता है।

जवाहरलाल नेहरू आधुनिक भारत के एक सुलझे हुए राजमर्मज्ञ थे। एक लेखक के रूप में उन्होंने इतिहासकार तथा राजनीतिक समीक्षक के रूप में अपनी पहचान बनाई। नेहरू का राजनीतिक दर्षन जीवंत विचारों में निहित है जो उन्होंने मुख्यतः इतिहास के विवेचन तथा भारतीय और विष्व राजनीति को एक रचनात्मक स्वरूप और दिषा प्रदान करने के लिये अपनाये तथा स्थापित किये। नेहरू के ये विचार उनकी आत्मकथा के अतिरिक्त उनकी प्रसिद्ध कृतियों जैसे 'विष्व इतिहास की झलक' तथा 'भारत की खोज' के अलावा उनके असंख्य लेखों पत्रों और भाषणों में निहित हैं। वे एक ऐसे अद्वितीय राजनीतिज्ञ थे जिनकी मानव मुक्ति के प्रति सेवायें चिरस्मरणीय रहेंगी। स्वाधीनता संग्रम के योद्धा के रूप में वे यषस्वी थे और आधुनिक भारत के निर्माण के लिये उनका योगदान अभूतपूर्व था।

नेहरू का अन्तर्राष्ट्रवाद

नेहरू का राष्ट्रवाद संकीर्ण और अनुदार नहीं था, इस अर्थ में वे अन्तर्राष्ट्रीयतावाद के पोषक थे। वस्तुतः वे राष्ट्रवाद को अन्तर्राष्ट्रीयतावाद की पूर्व शर्ते मानते थे। उन्होंने कांग्रेस तथा सम्पूर्ण मानव समाज को इसका व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया और यह प्रतिपादित किया कि स्वतंत्रता के लिये भारतीय संघर्ष वास्तव में एक वैष्विक संघर्ष का भाग था तथा इसे अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं को ध्यान में रखते हुए सफल बनाया जा सकता था। वस्तुतः विष्वषांति और विष्व सम्प्रदाय के विचार में नेहरू का बडा विष्वास था।

जवाहर लाल नेहरू का दृष्टिकोण मानवतावादी था। वे अन्तरराष्ट्रीय सहयोग, एकता तथा बन्धुत्व के महान् पक्षधर थे। वे विष्व– शांति के अग्रदूत थे। उनके अन्तराष्ट्रीयतावाद सम्बन्धी विचारों को निम्नलिखित रूप से विष्लेषित कर सकते हैं।

1. राष्ट्रवाद एवं अन्तर्राष्ट्रवाद की पारस्परिकता

नेहरू एक राष्ट्रवादी थे, परन्तु उनका राष्ट्रवाद अन्तर्राष्ट्रवाद का एक हिस्सा है । उनका राष्ट्रवाद एक अन्तराष्ट्रीयतावादी का राष्ट्रवाद है। उनकी निष्ठा वसुधैव कुटुम्बकम् में थी। उनकी आस्था भारतीय दर्षन, संस्कृति और भावनाओं के मूल तत्वों में थी । उदाहरणतः उनकी आस्था जीओ और जीने दो, अहिंसा, सहनषीलता और सहअस्तित्व के मूल्यों में थी। नेहरू का कहना था कि हमारे इस एकमात्र नक्षत्र में शांति अविभाजित है, समृद्धि अविभाजित है और तबाही भी अविभाजित है।

2. वैषविक घटनाओं का अन्तर्राष्ट्रीयकरण

नेहरू की धारणा थी कि आधुनिक युग अन्तनिर्भरता का युग है । इसमें कोई भी राष्ट्र एक–दूसरे से अलग नही रह सकता। कोई भी राष्ट्र अन्य राष्ट्र में होने वाली घटनाओं से अप्रभावित नही रह सकता। नेहरू का कहना था कि उद्योग का स्वभाव ही अन्तर्राष्ट्रीय है। उसने राष्ट्रीय सीमाओं को तोड़ दिया है।

3. राष्ट्रवाद एवं अन्तर्राष्ट्रवाद एक–दूसरे के पूरक–

नेहरू राष्ट्रवाद को अन्तर्राष्ट्रवाद का पूरक मानते थे उसका विरोधी नहीं। वह दोनों को एक–दूसरे की सहायक प्रवृतियॉ मानते है, एक–दूसरे के प्रतिकुल प्रवृतियाँ नहीं मानते थे। नेहरू का अन्तर्राष्ट्रीयवाद राष्ट्रीय स्वतन्त्रता अर्थात् राष्ट्रीय संगठनों की पूर्व कल्पना करता है। नेहरू ने कहा था कि एक स्वतन्त्र देष में ही अन्तर्राष्ट्रीयता का विकास हो सकता है, क्योंकि एक पराधीन देष की सारी सोच और शक्ति स्वतन्त्रता प्राप्ति की दिषा में लगी रहती है।

4. अन्तर्राष्ट्रीयतावाद का आधार मानवतावाद

नेहरू का कहना था कि एक राष्ट्रवादी हुए बिना हम अन्तर्राष्ट्रीयतावादी हो नही सकते। भावुकता और विवेकषीलता से भरी देषभक्ति ने नेहरू को राष्ट्रवादी बनाया और मानवता के प्रति प्रेम अर्थात् मानववाद ने उन्हें अन्तर्राष्ट्रीयतावादी बनाया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत द्वारा साम्राज्यवाद विरोधी, उपनिवेषवाद विरोधी, नव उपनिवेषवाद विरोधी और रंग भेद विरोधी जो विदेष नीति अपनाई गयी।

5. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की परिकल्पना

नेहरू अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री सहयोग को अति आवष्यक समझते थे। उनका शांतिवाद केवल यद्ध की अनुपस्थिति की कल्पना नहीं करता, बल्कि अन्तरराष्ट्रीय सहयोग और सूझबूझ की कल्पना करता है। इसके लिए नेहरू भारत की सम्प्रभुता के एक अंष का परित्याग करने के लिए तैयार थे। नेहरू ने भारत को विष्व की प्रगतिषील शक्तियों की पंक्ति में खड़े होने का सुझाव दिया था।

6. नेहरू और गुट निरपेक्षता

गुट निरपेक्षता अथवा अंसलग्नता की अवधारणा नेहरू की अन्तरराष्ट्रीय राजनीति को एक मौलिक देन है। गोपाल शर्मा के अनुसार, नेहरू की गुटनिरपेक्षता ने तीसरी दुनिया के देषों में नैतिक शक्ति, चेतना तथा आत्मसम्मान विकसित करने में भूमिका अदा की। इसका मूल लक्ष्य विष्व के शक्ति गुटों से अलग रहते हुए एक स्वतन्त्र विदेष नीति का अनुसरण करना है। यह किन्हीं पूर्वाग्रहों के आधार पर कार्य नहीं करती। यह समस्याओं पर वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण अपनाती है, व्यक्तिनिष्ठ नही। यह, तटस्थता की भॉति कोई स्थैतिक और नकारात्मक विचार नहीः यह एक गतिषील और सकारात्मक विचार है। यह अन्तरराष्ट्रीय घटनाओं पर स्वतन्त्र रूप से विचार करते हुए उनमें सक्रिय भूमिका निभाती है।

7. नेहरू एवं पंचषील के सिद्वान्त

पंचषील, जिसका शाब्दिक अर्थ आचरण के पाँच सिद्धान्त हैं, नेहरू की अन्तरराष्ट्रीय राजनिति को महत्वपूर्ण देन, तो है, परन्तु मौलिक देन नहीं। इन सिद्वान्तों का सर्वप्रथम प्रतिपादन महात्मा बद्ध ने किया था।

राष्ट्रों के बीच सम्बन्धों को निर्धारित करने वाले पंचषील के पाँच सिद्धान्तों की घोषणा चीन और भारत ने 1954 में तिब्बत के सम्बन्ध में हुए समझोते में की थी। पंचषील के पाँच सिद्धान्त निम्नलिखित है–

1. अखण्डता 2. अनाक्रमण 3. अहस्तक्षेप 4. समानता का अधिकार 5. शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व

पंचषील के ये सिद्धान्त अन्तराष्ट्रीय तनाव को कम करने, विष्व के राष्ट्रों में सहयोग तथा भ्रातृत्व को बढावा देने तथा विष्व शांति की स्थापना करने की दिषा में महत्ती भुमिका का निर्वाह करते है।

8. नेहरू एवं विष्व शांति

नेहरू के लिए विष्व शांति एक आदर्ष, एक साध्य और एक आवष्यकता है। गुट निरपेक्षता का उद्धेष्य शांति की स्थापना है। उन्होंने कहा था कि शांति की दलील हम इसलिए नहीं देते कि वह कोई श्रेष्ठतर गुण है, बल्कि इसलिए कि वह अनिवार्य हैः इसलिए कि सैन्य टैक्नालॉजी मानव जाति के अस्तित्व को ही खत्म कर देने का खतरा बन गयी है।

नेहरू युद्ध को अन्तर्राष्ट्रीय शांति में सबसे बड़ी बाधा मानते हैं। वह इसे राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों और सहयोग में, आर्थिक विकास ओर लोक कल्याण में बाधा मानते है।

उपर्युक्त विचार जवाहरलाल नेहरू को विष्व शांति का अग्रदूत तथा मानवता के मसीहा के रूप में प्रतिष्ठित करते है। इन विचारों के कारण ही उन्हें एक आदर्षवादी चिन्तक के रूप में जाना जाता है।

सारांष में, यही कहा जा सकता है कि जवाहरलाल नेहरू के विचार आज भी सामयिक तथा प्रांसगिक है। उनकी लोकतन्त्र, धर्म–निरपेक्षता, आर्थिक नियोजन, मिश्रित अर्थव्यवस्था पंचषील तथा गुट–निरपेक्षता की अवधारणा का आज भी महत्व बना हुआ है। वे एक महान् स्वप्न दृष्टा थे। उन्होंने आधुनिक भारत के निर्माण की परिकल्पना ही नहीं की, अपितु उसके निर्माण में महती भूमिका का निर्वाह किया।

संदर्भ :–

1. नेहरू, 'डिस्कवरी ऑफ इण्डिया' पृष्ठ–455
2. जे. पी. सूद, आधुनिक भारतीय सामाजिक तथा राजनीतिक विचारों की धारायें–खण्ड–3, पृष्ठ–256
3. डा. मधुकर श्याम चतुर्वेदी, प्रमुख राजनीतिक विचारक पृष्ठ 427–436
4. प्रतिनिधि भारतीय राजनीतिक विचारक–साहित्य भवन पब्लिकेषन आगरा, डॉ. पुखराज जैन – पृष्ठ– 179–183